SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. 2nd YEAR SESSION – 20-22

SUBJECT – C-10 (Creating an Inclusive School)

TOPIC NAME – अधिगम निर्योग्य बालक

DATE – 12-01-22

⇒ अधिगम निर्योग्य बालक :-

अधिगम निर्योग्य शब्द का अभिप्राय: उन दशाओं से है जो मस्तिष्क में चोट लगने तथा मस्तिष्क का सुचारू रूप से कार्य करने में अक्षम होने, किसी के द्वारा बोले गए शब्दों को समझने में अक्षम होने, बोलने में असमर्थ होने, लिखने में असमर्थ होने, शब्दों को ठीक प्रकार से दिखाई नहीं देने के कारण, गणितीय संख्याओं में कठिनाई होने आदि से संबंधित है।

ऐसे बालक जो उपरोक्त दशाओं में किसी एक अथवा एक से अधिक कारणों से अधिगम में कठिनाई का सामना करते है या पूर्ण से अक्षम है तो उसे अधिगम निर्योग्य बालक कहा जा सकता है।

शब्दकोष के अनुसार :- "यह एक ऐसी दशा है जो शारीरिक तथा मानसिक अक्षमता जिसके प्रशिक्षण स्वरूप एक व्यक्ति की शैक्षणिक, व्यवसायिक या अन्य क्रियाओं की आंशिक या पूर्ण योग्यता क्षमाप्त हो जाती है।

⇒ अधिगम निर्योग्यता - निदानात्मक प्रक्रिया :-

अधिगम निर्योग्यता की समस्या से निपटने के लिए एवं उसका उपचार करने के लिए एक उपचारी शिक्षक पहले संबंधित निर्योग्यता का निदान (जाँच) करता है। यह अपनी निदानात्मक प्रक्रिया में निम्नलिखित स्तरों से होकर गुजरता है –

(i) बालक की अधिगम क्षमता का निर्धारण करना।

(ii) निर्योग्यता में बालक की क्षमता एवं उपलब्धि के बीच विसंगति का निर्धारण करना।

(iii) निर्योग्यता का विश्लेषण करना एवं इसके विशेष लक्षणों की खोज करना।

(iv) उपचारात्मक प्रक्रिया की सलाह देता है जो निर्योग्यता को समाप्त कर दे।

⇒ अधिगम निर्योग्यता उपचार:-

निर्योग्यता के कारण ऐसे बालकों को अधिगम और समायोजन की विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिसके लिए वह निम्नलिखित तीन विधियों का प्रयोग करता है—

1. व्यवहारिक निर्देशन विधि:- इस विधि का उपयोग बच्चों के शैक्षिक वातावरण के साथ-साथ विद्यालय में शिक्षा निर्देशन के लिए किया गया है इस विधि में निम्नलिखित चार चरण है—

(i) केन्द्रबिन्दु का मापन करना।

(ii) जिस व्यवहार को परिमार्जित करना है, उसे केन्द्र-बिन्दु बनाना है।

(iii) व्यवहार में बाधक तत्वों को दूर करने का प्रयास करना।

(iv) व्यवहार परिवर्तनों को समय-समय पर उपयोग करना।

2. संज्ञानात्मक व्यवहार परिमार्जन विधि :-

संज्ञानात्मक व्यवहार परिमार्जन विधि के अध्ययन हेतु निम्न पदों पर बल देना आवश्यक है —

(i) संवेदनशीलता को बढ़ाना ।

(ii) लक्ष्योन्मुख व्यवहार पर बल देना ।

(iii) गणितीय क्रियाओं के समाधान पर बल देना ।

(iv) अध्ययन शैली पर सक्रिय बल ।

(v) लेखन आयामों पर निर्देशन ।

3. Computer निर्देशन विधि :

computer का प्रयोग करके निम्न प्रकार से बालकों में अधिगम निर्योग्यता को कम कर सकते है —

(i) computer कौशलों का विकास ।

(ii) अभ्यास करने की आदत का विकास ।

(iii) उद्देश्यानुसार प्रक्रिया उपयोग का बल ।